Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी व्याकरण को पं. किशोरी दास वाजपेयी की देन

Neelam Kumari*

Department of Hindi

शोध आलेख सार: ***हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में पं. किशोरीदास वाजपेयी नवीन चेतना के अग्रदूत बनकर आये। वे इस बात की घोषणा करनेवाले प्रथम वैयाकरण हैं कि हिन्दी एक स्वतंत्र भाषा है, वह संस्कृत से अनुप्राणित आवश्यक है, जैसे अन्य भारतीय भाषाएँ परन्तु वह अपने क्षेत्र में सार्वभौम सत्ता रखती है। यहाँ उसके अपने नियम कानून लागू होते है। संस्कृत का सब कुछ आँख बन्द करके हिन्दी न ले लेगी। उसमें संस्कृत या अन्य भाषओं में आनेवाले शब्द उसकी अपनी प्रजा है। उन पर वह अपने नियमों से शासन करेगी।1***

मुख्य शब्दः- हिन्दी, व्याकरण, दोष, कानून, प्रकृति सूचना।

----------X----------

किसी अन्य भाष के व्याकरण का हठात् शासन या अपने ऊपर उसके नियमों का आरोपित किया जाना उसे सहय नहीं, चाहे वह संस्कृत या लैटिन का ही व्याकरण क्यों न हो। हिन्दी ही नहीं, सभी भाषाओं की अपनी प्रकृति होती है। उसे कोई व्याकरण क्या, महाव्याकरण भी नहीं बदल सकता।2 परन्तु हाँ, व्याकरण भाषा का नियमन तब अवश्य कर सकता है, जबकि उसकसे पास अनुकूल तर्क ही और वह तर्क भाषा की प्रकृति के विरूद्ध न हो। 'प्रमाणवत्त्वादायातः प्रवाहः केन वार्यते' ?

वाजपेयी जी के उपर्युक्त विचार चाहे नये न, हों पर पूर्ववर्ती वैयाकरणों में से किसी ने भी उन्हें अपने व्याकरण में पूर्णतः चरितार्थ करने की प्रवृत्ति नहीं दिखालायी थी। यहाँ तक कि गुरू जी जैसे गम्भीर वैयाकरण ने भी हिन्दी व्याकरण को अंगे्रजी और संस्कृत व्याकरण के शासन से मुक्त करने का अपेक्षित प्रयास नहीं किया। इस पृष्टि से हिन्दी को हिन्दी का प्रथम विशुद्ध व्याकरण देने का श्रेय वाजपेयी जी को ही है।

योतों हिन्दी व्याकरणों में प्रचलित दोषों के निराकरण का प्रया सवे सन् 1624-25 से ही करते आ रहे थे, पर इस दिशा में स्वतंत्र ग्रंथ-रचना का प्रथम प्रयास उन्होंने 1643 ई॰ में किय, जिस वर्ष उनका 'ब्रजभाषा का व्याकरण' हिमालय ऐजेन्सी, कनखल से प्रकाशित हुआ। उसकी भूमिका में उन्होंने खड़ी हिन्दी के रूप एवं प्रकृति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण मौलिक सूचनाएँ दी जिनसे प्रचलित व्याकरणों के अनेक दोषों पर पहली बार प्रकाश पड़ा। उसमें अन्य अनेक बातों के अतिरिक्त पं॰ कामता प्रसाद गुरू द्वारा दी गयी कार की परिभाषा का भी उन्होंने खण्डन किया और संस्कृत वैयाकरणों की परिभाष का समर्थन करते हुए लिखा कि क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं।3 इसी आधार पर उन्होंने सम्बध और सम्बोधन को कारक की कोटि से अलग करते हुए हिन्दी में केवल छह कारक माने।

'विभक्ति सटाकर' या हटाकर के प्रश्न पर उनका निर्णय था कि 'हिन्दी में दोनों विकल्प हैं, चाहे जैसे लिखो। परन्तु सटाकर लिखने की अपेक्षा हटाकर लिखने में सुविधा अधिक है'।4

हिन्दी क्रियाओं के वाच्य के सम्बन्ध में हिन्दी व्याकरणों में प्रचलित भ्रम का उसमें उन्होंने विस्तार से निराकरण किया। इस विषय में गुरू जी की भ्रांति का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा 'ऐसा जान पड़ता है कि गुरू जी हिन्दी के स्वरूप को ठीक-ठीक समझे बिना ही इसका व्याकरण लिखने बैठ गये और इसीलिए रग पर नश्तर लग गया। बात यह कि उन्होंने हिन्दी का व्याकरण बनाने में संस्कृत, अंगरेजी तथा मराठी आदि के व्याकरणों पर ध्यान रखाः हिन्दी के स्वरूप पर नहीं, इसीलिए ऐसी भंयकर गलतियाँ हो गयी हैं। संस्कृत भाष में आकर्मक क्रियाओं के कृर्तवाच्य तथा भाववाच्य में प्रयोग होते हैं। सकर्मकों के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में होते हैं। अकर्मक क्रिया का वहाँ भाववाच्य प्रयोग नहीं होता। यह था तो संस्कृत भाषा के विषय में: पर गुरू जी ने शायद संसार भर की भाषाओं के बारे में उसे समझ लिया इसीलिए, हिन्दी भाष के व्याकरण में भी उसे लिख दिया।5

www.ignited.in

इसी संदर्भ में डॉ. बाबूराम सक्सेना की भूल की और इंगित करते हुए उन्होंने लिख "डाॅ॰ बाबूराम सक्सेना ने अपने भाषविज्ञाान में हिन्दी के वर्तमान स्वरूप का विवेचन करते हुए लिखा है कि 'क्रया में कर्मवाच्य के अलग रूप बिल्कुल गायब हो गये हो गये है और 'जाना' सहायक क्रिया से उसका काम चला लिया जाता है। 'स्पष्ट है कि 'राम ने पुस्तक पढ़ी' इत्यादि भूकाल की कर्मवाच्य क्रियाओं को डॉ. सक्सेना ने कर्तृवाच्य समझ रखा है, जैसा कि प्रचलित हिन्दी व्याकरणों में पढ़ा था। उन्होंने इसका कर्मवाच्य में यह रूप् भी पढ़ा थ- 'राम से पुस्तक पढ़ी गयी'। इस विकृत वाक्य को कर्मवाच्य और उसका कर्मवाच्य को कृर्तवाच्य समझ लेने का परिणाम यह हुआ कि 'भाषाविज्ञान' जैसे ग्रंथ में उन्होंने लिख दिया- 'क्रिया के कर्मवाच्य के रूप बिल्कुल गायब हो गये है' सो यह बा हिन्दी में प्रचलित व्याकरण पुस्ताकों का प्रभाव है, जिनके पढ़ने से देश के करोड़ों छात्रों का करोड़ों घंटे प्रतिदिन समय नष्ट होता है और करोड़ों रूप्ये पुस्तक खरीदने में व्यर्थ जाते हैं।"6

इसी प्रकार प्रेरणा तथा कर्म-कर्तृप्रयोग7, विशेषण तथा उसके भेद8, क्रिया विशेषण9, आदि अन्य अनेक विषयों के सम्बन्ध में प्रचलित व्याकरणों की भ्रान्तियों का निराकरण उन्होंने अपने उपर्युक्त ग्रंथ की भूकिा में किया।

वाजपेयी जी की दूसरी पुस्तक 'अच्छी हिन्दी का नमूना' का प्रकाशन 1648 ई॰ में जनवाणी कलकत्ता से हुआ। उसकी रचना रामचन्द्र वर्मा जी की 'अच्छी हिन्दी' के दोषों की और संकेत करने के उदेश्य से हुई थी। उक्त ग्रंथ के द्वक्षरा शब्द-प्रयोग तथा व्याकरण सम्बन्धी अनेक भ्रांत धारणाओं का निरसन हुआ। उनमें मुख्य रूप से भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों के मनावैज्ञानिक विश्लेषणा और संशोधन, हिन्दी के व्याकरण और कोष, अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति, भाषा का इतिहास, वाक्य-विन्यास, मुहावरों के सही स्वरूप तथा विराम चिह्नों के प्रयोग पर महत्वपूर्ण मौलिक चिन्तन उपस्थित किया गया।

उनका 'राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण' 1646 ई॰ में जनवाणी कलकत्त से प्रकाशित हुआ। उनके मतानुसार यह हिन्दी का पहल निर्दोष व्याकरण है। उनकी इस मान्यता को चाहे हम स्वीकार न भी करें, फिर भी इतना स्वीकार करना ही होगा कि इसमें उन्होंने पूर्ववर्ती वैयाकरणों के अनेक दोषों का पहली बार समुचित परिमार्जन किया, जिससे हिन्दी का प्रकृत स्वरूप् अधिक शुद्धता एवं स्पष्टता से लोगों के सामने आया।

1646 ई॰ में ही वाजपेयी जी का एक अन्य ग्रंथ हिन्दी निरूक्त आया जिसमें निरूक्त की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए उन्होंने हिन्दी के अनेक शबदों के विकास क्रम को स्पष्ट करने का प्रयास किया। ग्रंथ के विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने लिखा "निरूक्तशास्त्र में भाषा के विकास पर विचार किया जाता है। जीवित या प्रचलित भाष में परिवर्तन हुआ करता है। देश, काल तथा पात्र के भेद से शब्दों के उच्चारण में अन्तर आया करता हैं; क्योंकि उच्चारण यंत्रों की भिन्नरूपता शब्दों की स्वरूप-भिन्नता में कारण है। हम लोग जिस सिक्के को पेसा कहते हैं, उसी को पंजाब में 'पैहा' कहते है। स्पष्ट है कि 'पैसा' से 'पैहा' भिन्न शब्द नहीं है, फिर भी भिन्न है, स्वरूप-भेद है। अँगरेजों के देश में जो प्रतिष्ठा-सूचक शब्द 'सर' है, वह हमारे 'श्री' शब्द का ही घिसा-घिसाया रूपान्तर हो तो क्या अचरंज की बात है? वैसे सर हमारे यहाँ भी बहुत पहले से है, जो पंचों में 'सरपंच' से स्पष्ट है। वही 'सर' जर्मनी में जाकर 'हर' हो गया। हमारे देश का 'संत' ईरान में 'हंत' हो जाता है और हमारा 'सम' वहाँ हम बन जाता है। एक ही देश में और एक ही काल में भी एक ही भाषा के एक शब्द में अनेकरूपता हम देख सकते हैं।

निष्कर्ष:-

संस्कृत का 'दश' हिन्दी में 'दस' बन गया और यही दस फिर 'दहाई' तथा 'दहले' में अपने स को 'ह' बनाये हुए है। काल-भेद से भी भाषा में इसी तरह परिवर्तना होता है देश-काल तथा अन्य ऐसे ही कारणों से शब्द में जो परिवर्तन होता है, अर्थ में जो विकास होता है, उसी के विचार को 'निरूक्त' कहते हैं।"10

सन्दर्भ-ग्रन्थ:

1. हिन्दी शब्दानुशासन, पृ॰ 56-57
2. वही, पृ॰ 62
3. ब्रजभाषा का व्याकरण, भूमिका पृ॰ 66
4. ब्रजभाष का व्याकरण, पृ॰ 41
5. वही, भृमिका, पृ॰ 54-55
6. वही, पृ॰ 60-61
7. ब्रजभाषा का व्याकरण पृ॰ 64-66
8. वही, पृ॰ 68
9. वही, पृ॰ 70
10. हिन्दी निरूक्त, पृ॰1-3

www.ignited.in

Corresponding Author

Neelam Kumari*

Department of Hindi

ashok58182@gmail.com